# NH Notes - 07

## दादा लख्मीचंद बनाम दादा मेहर सिंह

जब पंडित लख्मीचंद ने कहा कि, **"मैं आज के बाद जहां जाट मेहर सिंह के सांग होंगे, वहाँ सांग नहीं करूँगा और ना ही उसके साथ स्टेज साझा करूँगा|"**

बुजुर्गों से पूछने पर बताते हैं कि एक जमाना होता था जब कवि लख्मीचंद और कवि जाट मेहर सिंह की एक ही सांग मंडली हुआ करती थी और दोनों एक ही स्टेज से शो किया करते थे|

लेकिन क्योंकि जाट मेहर सिंह ने अपनी प्रतिभा से जनता में सबसे अलग पैठ बना ली थी, जिससे धीरे-धीरे कवि लख्मीचंद चिढ़ने लगे और एक दिन तो गुस्से में जाट मेहर सिंह को साझे स्टेज को भी अपना बताते हुए अहमवस स्टेज से कहा कहा कि तुम मेरे स्टेज से उतर जाओ, तुम्हारी अपनी कोई लोकप्रियता नहीं, तुम मेरी लोकप्रियता से चढ़ते जा रहे हो| तो इस पर जाट मेहर सिंह ने कवि लख्मीचंद को गलत साबित कर उनके लोकप्रियता के बहम को तोड़ने के लिए, कवि लख्मीचंद के स्टेज के टक्कर में बिलकुल सामने ही अपना स्टेज लगा दिया और कहा कि ले लख्मीचंद आ जा आज देखें किसकी वजह से किसकी लोकप्रियता बनी है|

और दोनों में कम्पटीशन शुरू हो गया, और देखते-ही-देखते सारी भीड़ जाट मेहर सिंह के स्टेज के आगे जा पहुंची और दादा लख्मीचंद का पंडाल लगभग खाली हो गया| ऐसे दादा लख्मीचंद का घमंड चकनाचूर हुआ तो दादा लख्मीचंद ने माफ़ी मांगी, लेकिन अहमवस बोले और आजीवन फैसला कर लिया कि, "मैं आज के बाद जहां जाट मेहर सिंह के सांग होंगे, वहाँ सांग नहीं करूँगा और ना ही उसके साथ स्टेज साझा करूँगा|"

इस पर जाट मेहर सिंह ने कहा कि, "मेरी आपसे कोई दुर्भावना नहीं, मेरा मकसद सिर्फ आपका वहम दूर करना था|"

फिर भी समझ से पर है कि ऐसा क्या है कि पंडित लख्मी चंद को तो सूर्यकवि कहलवा दिया गया जबकि उन्हीं के समकक्ष और उनसे बेहतर साबित हुए फौजी जाट मेहर सिंह को नहीं कहलवाया गया?

**Author:** Phool Malik

**Publisher:** Nidana Heights

**Date:** 16/11/2014